tal No. of Questions : **12**] [Total No. of Printed Pages

UGA–231

B.A. (Part–II) N.C. Examination, 2021

(For Non-Collegiate Only)

HINDI LITERATURE

Paper - I

(रीतिकालीन काव्य)

ne : 1½ Hours] [*Maximum Marks :*

खण्ड–अ **(अंक : 2 × 10 =**

:– सभी **दस** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **50** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **2** अंक का है।

खण्ड–ब **(अंक : 8 × 5 =**

:– सात में से किन्हीं **पाँच** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **200** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **8** अंक का है।

खण्ड–स **(अंक : 20 × 2 =**

:– चार में से किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **500** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **20** अंक का है।

खण्ड–अ

:– सभी **दस** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर सीमा **50** शब्द) :

(i) केशवदास को कठिन काव्य का प्रेत कहा जाता है। संक्षेप में उत्तर दीजिए।

(iv) रीतिकाल के अन्य कवियों से भूषण कवि भिन्न हैं, क्यों ? प्रश्न के सन्दर्भ में उचित तर्क दीजिए।

(v) 'दौलत पाय न कीजिये, सपने में अभिमान' काव्य पंक्तियों में कवि गिरधर राय क्या सन्देश प्रेषित करते हैं ?

(vi) संत कवियों में रज्जब का महत्व प्रतिपादित कीजिए।

(vii) रीतिबद्ध और रीतिमुक्त काव्य में अन्तर स्पष्ट कीजिए।

(viii) रीतिकाल की राजनीतिक परिस्थितियों पर प्रकाश डालिए।

(ix) काव्य-प्रयोजन से क्या तात्पर्य है ?

(x) निम्नलिखित छन्दों के लक्षण तथा उदाहरण दीजिए :

(अ) दोहा

(ब) चौपाई

(स) द्रुत विलम्बित

खण्ड–ब

:– निम्नलिखित अवतरणों की सात में से **पाँच** की सप्रसंग व्याख्या कीजिए (उत्तर-सीमा **200** शब्द) :

सब जाति फटी दुख की दुपटी कपटी न रहै जहँ एक घटी।

निघटी रुचि मीचु घटी हूँ घटी जगजीव जतीन की छूटी तटी॥

अघ ओघ की बेरी कटी विकटी निकटी प्रकटी गुरु ज्ञान गटी।

चहुँ ओरन नाचति मुक्ति नटी गुन धूरजटी वन पंचवटी॥

झहरि झहरि झीनी बूँदनि परति मानो,

घहरि घहरि घटा बेरी है गगन मैं।

आनि कह्यों स्याम मोसों चलो झूलिबे को आजु,

सोइ गए भाग मेरे जागि व जगन मैं।

आँखि खोलि देखीं तो न घन हैं, न घनस्याम,

छाई बेई बूँदे, मेरे आँसू ह्वै दृगन मैं॥

भोग में रोग वियोग संयोग में, योग में काय-कलेस कमायो।

त्यों 'पद्माकर' वेद, पुरान, पढ्यो, पढ़ि कै बहु बाद बढ़ायो॥

दूनी दुरास में दास भयों, पै कहूँ विसराम को धाम न पायो।

कायो गमायो सु ऐस ही जीवन, हाय मैं राम को नाम न गायो॥

इन्द्र जिमि जंभ पर बाड़व सुअंभ पर,

रावन संदभ पर रघुकुल राज है।

पौन पारिवाह पर संभु रतिनाह पर,

ज्यौं सहस्त्रबाहु पर राम द्विजराज है॥

दावा द्रुमदंड पर चीता मृग झुंड पर,

भूषण वितुंड पर जैसे मृगराज है।

तेज तम अस पर कान्ह जिमि कंस पर,

त्यौं मलेच्छ-वंस पर सेर सिवराज है॥

प्रेम सदा अति ऊँचो लहै, सु कहै इहि भाँति की बात छकी।

सुनि कैं सबके मन लालच दौरें, पै बौरे लखैं सब बुद्धि चकी॥

जग की कविताई के धोखें रहें ह्याँ प्रबीननि की मति जाति जकी।

समुझै कविता घनआनँद की हिय-आँखिन नेह की पीर तकी॥

गुण के गाहक सहस नर, बिन गुण लहै न कोय।

जैसे कागा कोकिला, शब्द सुनै सब कोय॥

शब्द सुनै सब कोय, कोकिला सबै सुहावन।

दोऊ का इक रंग काग सब भये अपावन॥

कह गिरिधर कविराय सुनौ हो ठाकुर मन के।

रज्जब माँहि सहायकरि, तब बाहिर दे चोट॥

पतिब्रता के पीव बिन, पुरुष न जनम्याँ कोइ।

त्यूँ रज्जब रामहिं रचै, तिनके दिल नहिं दोइ॥

हरि दरिया में मीन मन, पीवे प्रेम अगाध।

महा मगन रस में रहै, जन रज्जब सो साध॥

खण्ड–स

:– चार प्रश्नों में से किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर सीमा **500** शब्द) :

"बिहारी के दोहे गागर में सागर भरने की अप्रतिम क्षमता रखते हैं।" उक्त कथन के आलोक में उपयुक्त उदाहरणों द्वारा इनकी समीक्षा कीजिए।

रीतिकाल में सेनापति का 'प्रकृति चित्रण' अन्य कवियों से किस प्रकार भिन्न है ? सोदाहरण समझाइए।

"घनानन्द स्वच्छन्द काव्यधारा के अग्रणी कवि थे।" इस कथन को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

रीतिकाल के विभिन्न नामकरणों की तर्क सहित विवेचना कीजिए।